



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 288]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 15, 2000/अग्रहायण 24, 1922

No. 288]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 15, 2000/AGRAHAYANA 24, 1922

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 दिसम्बर, 2000

अंतिम जांच परिणाम

विषय : यूरोपीय संघ और ताइवान से बिसफिनोल-ए के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

सं. 47/1/99-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति-निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. पद्धति

1. नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है :

- (क) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी भी कहा गया है) ने दिनांक 27 अप्रैल, 2000 की अधिसूचना संख्या 47/1/99-डीजीएडी के द्वारा यूरोपीय संघ और ताइवान से बिसफिनोल-ए के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच के बारे में प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित किया था तथा हितबद्ध पार्टियों से इसके प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित रूप से अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था;
- (ख) प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति भेजी थी जिनसे पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अपने विचार, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था;
- (ग) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए 19/7/2000 को सार्वजनिक सुनवाई का अवसर प्रदान किया। अपने विचार व्यक्त करने वाली सभी पार्टियों से अनुरोध किया गया था कि वे व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में सार्वजनिक सुनवाई के समय प्रस्तुत करें। पार्टियों को सलाह दी गई थी कि वे विरोधी पक्षों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां तथा उनके प्रत्युत्तर, यदि कोई हों, प्राप्त कर लें। याचिकाकर्ता और उपयोगकर्ता उद्योग के सदस्य मौखिक सुनवाई के समय उपस्थित थे। संबद्ध देशों से

निर्यातकों ने मौखिक सुनवाई में भाग नहीं लिया था। ई सी और ताइपेई आर्थिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र के शिष्टमंडल के प्रतिनिधियों ने सुनवाई में भाग लिया था। प्राधिकारी ने यह नोट किया कि घरेलू उद्योग, मै0 केशर पेट्रोप्रोडक्ट्स लिमिटेड, ने सुनवाई के समय अपने द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत नहीं किया। याचिकाकर्ता ने दिनांक 12 सितम्बर, 2000 के पत्र में इन जांचों से संबंधित कुछ मापदण्डों पर प्रकाश डालने की मांग की थी, जो पाटनरोधी शुल्क महानिदेशालय को केवल दिनांक 26 सितम्बर, 2000 को प्राप्त हुआ था। प्राधिकारी द्वारा की गई सार्वजनिक सुनवाई का उसमें कोई जिक्र नहीं किया गया है।

पाटनरोधी संबंधी डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 6.3 में विहित प्रावधानों के अनुसार प्राधिकारी द्वारा केवल उसी मौखिक सूचना को ध्यान में रखा जाएगा जो बाद में लिखित रूप में पुनः प्रस्तुत कर दी जाएगी और उसे अन्य हितबद्ध पार्टियों के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। इस प्रकार प्राधिकारी नोट करते हैं कि सार्वजनिक सुनवाई के समय याचिकाकर्ता के पास प्रस्तुत करने के लिए कोई टिप्पणी नहीं थी।

(घ) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों और प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली फाइल उपलब्ध करवाई थी।

(ङ) मै0 पेट्रो अरालडाइट प्रा0 लि0 और मै0 बेयर एजी, जर्मनी ने प्राधिकारी से अनुरोध किया था कि प्रकटन विवरण को अन्तिम रूप दिए जाने से पहले प्रत्येक की सुनवाई की जाए। मै0 पेट्रो अरालडाइट प्रा0 लि0 ने उक्त सुनवाई में अपने द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का लिखित अनुरोध दायर कर दिया था। बेयर एजी ने भी अपने वितरकों और निर्यातक हेल्म इंडिया प्रा0 लि0 को संगत तथ्यों और आंकड़ों को प्रस्तुत करने की अनुमति देने का अनुरोध किया था। उसी दिन अर्थात् दिनांक 13 नवम्बर, 2000 को की गई व्यक्तिगत सुनवाई में, हेल्म इंडिया ने कुछ तथ्य प्रस्तुत किए और अलग-अलग की गई सुनवाई के समय उनके द्वारा यथा प्रस्तुत तथ्य भी लिखित रूप में प्रस्तुत किए। याचिकाकर्ता द्वारा दिनांक 1 दिसम्बर, 2000 की सुनवाई के दौरान प्रस्तुत किए गए अनुरोधों पर भी प्राधिकारी ने विचार किया।

(च) याचिकाकर्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों के द्वारा उठाए गए तर्कों पर प्रारम्भिक निष्कर्षों और/या इन निष्कर्षों में समुचित रूप से विचार किया गया है ;

(छ) उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचारित अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के लिए कर दिया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर इन निष्कर्षों में विधिवत विचार किया गया है ;

(ज) *** यह चिह्न इस अधि सूचना में गोपनीय आधार पर किसी हितबद्धपार्टी द्वारा प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमों के तहत उसे गोपनीय ही माना है ।

(ख) विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान जांच में शामिल उत्पाद यूरोपीय संघ और ताइवान के मूल का अथवा वहां से निर्यातित बिसफिनोल-ए है । बिसफिनोल-ए का उपयोग, फेनोलिक रेजिन्स, इपोक्सी रेजिन्स, पॉलीकार्बोनेट रेजिन्स तथा अनसेचुरेटेड पॉलिस्टर रेजिन्स में किया जाता है और यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्ष सं० 2907.23 के अंतर्गत वर्गीकृत है । यद्यपि यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांचों के दायरे पर किसी प्रकार बाध्यकारी नहीं है ।

प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद से संबंधित प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं ।

समान उत्पाद

3. पाटनरोधी नियमों के नियम 2 (घ) में सुस्पष्ट है कि "समान वस्तु" का अर्थ है एक ऐसी वस्तु जो जांचाधीन उत्पाद के समरूप या सभी प्रकार से समान हो अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में कोई दूसरी वस्तु, जो जांचाधीन वस्तु से गुणधर्मों में सभी प्रकार मिलती जुलती हो ।

याचिकाकर्ताओं ने दावा किया था कि उनके द्वारा बेची जा रही तथा संबद्ध देशों से आयात की जा रही बिसफिनोल-ए का भारत में उपभोक्ताओं द्वारा एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जा रहा है । एडिटिक्स जैसे मामूली विभेदों को छोड़कर मशीनरी, कच्चा माल और विनिर्माण प्रक्रिया के रूप में इस उत्पाद की विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी सम्पूर्ण विश्व में एक समान है । किसी भी हितबद्ध पक्ष ने याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावों पर विवाद नहीं किया है ।

कुछ हितबद्ध पक्षों ने आयातित और याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित बिसफिनोल-ए के बीच गुणवत्ता संबंधी असमानताओं का उल्लेख किया है । एक मुख्य आयातक अर्थात् मै० पैट्रो अरालडाइट लिमिटेड ने बाद में गुणवत्ता के मुद्दे को उजागर किया है । लेकिन ऐसे अनुरोधों के समर्थन में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराए हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि गुणवत्ता की असमानताएं वस्तु के समान होने को प्रभावित नहीं करती हैं । दूसरी ओर इस की मूल विनिर्माण-प्रक्रिया, प्रयोग और हर तरह का उपयोग एक समान हैं । आयातित उत्पाद तथा याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित जांचाधीन उत्पाद के बीच उच्च डिग्री की प्रतिस्थापनीयता और प्रतिस्पर्द्धा की गुंजाइश है ।

इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित बिसफिनोल-ए के गुण धर्म

आयातित उत्पाद से पूरी तरह से मेल खाते हैं और यह वाणिज्यिक और तकनीकी दोनों रूप में संबद्ध देशों से आयातित बिसफिनोल-ए की प्रतिस्थापनीय वस्तु है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित बिसफिनोल-ए को नियम 2(घ) के अर्थ के भीतर यूरोपीय संघ और ताइवान से आयातित उत्पाद के समान वस्तु के रूप में माना गया है।

उपरोक्त को देखते हुए, प्राधिकारी समान वस्तुओं के संबंध में प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं।

ख. घरेलू उद्योग

4. मै0 केशर पेट्रोप्रोडक्ट लि0, मुम्बई ने याचिका दायर की है। याचिकाकर्ता भारत में बिसफिनोल-ए का एकमात्र उत्पादक है। किसी भी हितबद्ध पक्ष ने घरेलू उद्योग के प्रतिनिधित्व के लिए याचिकाकर्ता की स्थिति पर विवाद नहीं किया है। इस प्रकार याचिकाकर्ता कंपनी का घरेलू उत्पादन का 100 % हिस्सा बनता है और नियमों के तहत याचिका दायर करने की अपेक्षित स्थिति में है।

ड. जांच अवधि

5. जांच 1 अप्रैल, 1998 से 30 सितम्बर, 1999 की अवधि के लिए की गई थी।

च. पाटन

उद्गम वाले देशों में संबद्ध वस्तुओं के निर्यातक और उत्पादक

6. संबद्ध देशों में बिसफिनोल-ए के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने संगत सूचना के लिए प्राधिकारी के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया था। इन जांचों की प्रारम्भिक स्थिति के बाद, मै0 बेयर एजी, जर्मनी ने एक पत्र में प्राधिकारी को बताया कि बेयर एजी, जर्मनी के खिलाफ यह कार्यवाही शुरू करने के बारे में उन्हें कोई अधिकार सूचना प्राप्त नहीं हुई थी और न ही कोई प्रश्नावली प्राप्त हुई थी। इन कार्यवाहियों के बारे में उन्हें दिनांक 27 अप्रैल, 2000 की अधिसूचना के द्वारा सूचना प्राप्त हुई थी। उन्होंने यह भी बताया कि बेयर एजी द्वारा भारत को बिसफिनोल-ए का सीधे निर्यात नहीं किया जाता है। बेयर एजी अपने प्राधिकृत निर्यातक और वितरक हेल्म एजी, जर्मनी के साथ-साथ हेल्म इंडिया की सहायक हेल्म इंडिया प्रा. लि., मुम्बई के माध्यम से कार्य करती है।

बेयर एजी ने प्राधिकारी से भी निवेदन किया है कि उनके वितरक और निर्यातक हेल्म को संगत तथ्य और आंकड़े प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए। 13 नवम्बर, 2000 को दिए गए व्यक्तिगत सुनवाई के अवसर पर भी हेल्म इंडिया ने कुछ तथ्य प्रस्तुत किए थे और व्यक्तिगत सुनवाई के समय उल्लेख किए गए इन तथ्यों को लिखित रूप में प्रस्तुत किया था।

7. सामान्य मूल्य

ताइवान

प्राधिकारी ने नियम 9 के (i) (ग) के अनुसार संबद्ध वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य की जांच की है। ताइवान के सामान्य मूल्य का मूल्यांकन दिनांक 27.4.2000 को प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा ज 8(i) और (ii) पर दिया गया है। प्रारंभिक निष्कर्षों के प्रयोजनार्थ ताइवान के निर्यातकों के लिए विस्फिनोल-ए का निर्मित सामान्य मूल्य ***/किग्रा. या ***/रू/किग्रा. लिया गया था। अंतिम निष्कर्षों के उद्देश्य से प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान ताइवान में निर्मित सामान्य मूल्य का पुनर्निर्धारण 42.39 रू = 1 यू.एस. डालर की औसत विनिमय दर पर ***/किग्रा. यू.एस. डालर या ***/रू. / किग्रा. के रूप में किया है।

यूरोपीय संघ

यूरोपीय संघ के सामान्य मूल्य का मूल्यांकन प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा ज. 9 पर दिया गया है। प्रारंभिक निष्कर्षों के प्रयोजनार्थ यूरोपीय संघ के निर्यातकों के लिए विस्फिनोल-ए का सामान्य मूल्य ***/किग्रा. यू.एस. डालर या ***/रू./किग्रा. माना गया था।

तथापि हेल्म इंडिया, प्रा. लि. ने एक-एक करके सुनवाई के समय उक्त सुनवाई में अपने द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में प्रस्तुत किया था। एक स्वतंत्र रसायन सूचना सेवा (कॉपी राइट: रीड बिजनैस, इंफोर्मेशन लि.) द्वारा "आईसीआईएस - एल ओ आर" के उद्धरण प्रस्तुत किए थे जिनमें यूरोप में विस्फिनोल-ए की घरेलू कीमतों का सार दिया गया था तथा उक्त एजेंसी द्वारा प्रकाशित विनिमय दरें दी गई थीं। उसमें दी गई अगस्त, 1998 नवम्बर, फरवरी, 1999 और मई, 1999 की सूचनाओं के अनुसार, जांच अवधि के दौरान यूरोप के घरेलू बाजार में विस्फिनोल-ए की औसत घरेलू कीमत 1 यू.एस. डालर = 1.78 डीएम और 42.39 रूपा = 1 यू.एस. डालर की औसत विनिमय दर पर, ***/कि.ग्रा. यू.एस. डी या ***/रू./किग्रा. थी। चूंकि ***/मी. टन यूएस डालर के औसत स्वदेशी भाड़े का दावा और इससे संबंधित दस्तावेजी साक्ष्य उपलब्ध कराने का कार्य इन जांचों के अंतिम चरणों में किया गया था, इसलिए, प्राधिकारी ने इस दावे को अस्वीकृत कर दिया है।

8. निर्यात कीमत:-

ताइवान और यूरोपीय संघ

प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से निर्यात कीमत की गणना के लिए डीजीसीआई एंड एस द्वारा प्रस्तुत सूचना पर विश्वास किया है। ताइवान और यूरोपीय संघ की निर्यात-कीमत का मूल्यांकन प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा-ज-10 पर दिया गया है। अनंतिम निष्कर्षों के प्रयोजनार्थ यूरोपीय संघ और ताइवान के निर्यातकों के लिए समायोजनों के पश्चात् विस्फिनोल-ए की कारखानाद्वार-स्तर पर निर्यात कीमत क्रमशः ***रु./किग्रा. और ***रु./किग्रा. निकाली गई थी।

ताइवान से विस्फिनोल-ए के निर्यातकों के मामले प्राधिकारी द्वारा यथा-निर्धारित निर्यात की भारत औसत सीआईएफ कीमत ***रु./किग्रा. थी। 5 % की दर से समुद्री भाड़े, 0.5% की दर से बीमा, भारतीय एजेंट के लिए 3% की दर से कमीशन, निर्यातक देश में एजेंट के लिए 3 % की दर से कमीशन और 1% की दर से पत्तन हैंडलिंग प्रभार के लिए समायोजन करने के पश्चात् ताइवान से संबद्ध वस्तु के निर्यात हेतु कारखाना द्वार-स्तर पर निर्यात कीमत 8**रु./किग्रा. या ***/किग्रा. यू.एस. डालर आती है।

यूरोपीय संघ से विस्फिनोल-ए के निर्यातकों के मामले में, प्राधिकारी द्वारा निर्धारित भारत औसत कीमत *** रु./किग्रा. थी। 5% की दर से समुद्री भाड़ा, 5% की दर से बीमा, भारतीय एजेंट के लिए 3% की दर से कमीशन, निर्यातक देश में एजेंट के लिए 3% कमीशन और 1% की दर से पत्तन हैंडलिंग प्रभारों हेतु समायोजनों के पश्चात् यूरोपीय संघ से संबद्ध वस्तु के निर्यातों के लिए ***रु./किग्रा. या ***/किग्रा. यू.एस. डालर कारखानाद्वार कीमत आती है।

9. घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त किए गए विचार

संबद्ध देशों के किसी भी निर्यातक ने निर्धारित ढंग से तथा निर्धारित प्रारूप में सूचना प्रदान नहीं की है। निर्दिष्ट प्राधिकारी नियमों के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने वाली कार्रवाई को पूर्णतः तर्कसंगत ठहराते हैं।

10. पाटन मार्जिन

प्राधिकारी की स्थिति:

प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-1 में यथा निर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन की गणना करने वाले सिद्धांतों को अपनाने की प्रक्रिया का सतत् रूप से अनुसरण किया है। तदनुसार, सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने युरोपीय संघ और ताइवान के सभी निर्यातकों के मामले में निम्नानुसार सारणी में दिए गए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है:-

देश	निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य (यूएसडी/किग्रा.)	निर्यात कीमत (यूएसडी/किग्रा.)	पाटन मार्जिन %
यूरोपीय संघ	सभी निर्यातक/ उत्पादक	***	***	18.27 %
ताइवान	सभी निर्यातक / उत्पादक	***	***	38.8 %

छ. क्षति

11. घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए तर्क

याचिकाकर्ता के विचारों को प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा ख.2 में दर्शाया गया है और दिनांक 12 सितम्बर, 2000 के अपने पत्र के साथ-साथ यह उल्लेख किया है कि निविष्टियों की कीमतों में वृद्धि के कारण उत्पादन लागत में पर्याप्त वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने यह बताया है कि विस्फेनोल-ए के उत्पादन के लिए फिनोल और ऐसीटोन प्रमुख कच्ची सामग्रियां हैं। इन सामग्रियों का विस्फेनोल-ए के उत्पादन में लगी कुल कच्ची सामग्री लागत का लगभग 85% हिस्सा बैठता है। फिनोल और ऐसीटोन की कीमतें याचिकाकर्ता के नियंत्रण से बाहर हैं और इनमें जांच अवधि के बाद वाली अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई है। इसके अलावा, फर्नेस ऑयल और पॉवर की कीमतों में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप परिवर्तनीय लागतों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। इससे कम्पनी के उत्पादन में लगातार वृद्धि होने के बावजूद कुल उत्पादन लागत में पर्याप्त वृद्धि हुई है। लागत में वृद्धि मुख्यतः फिनोल और ऐसीटोन पर लगे रक्षोपाय शुल्क जैसे शुल्कों के परिणामस्वरूप इन निविष्टियों में वृद्धि के कारण हुई है। उत्पादन लागत में अत्यधिक वृद्धि होने से

लागू अनंतिम पाटनरोधी शुल्क का प्रभाव एक दम समाप्त हो गया है और सिफारिश किया गया शुल्क उद्योग के वैध हितों की रक्षा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

12. मैसर्स पेट्रो अरालडाइट प्रा. लि., चेन्नई द्वारा उठाए गए तर्क

जैसाकि प्रकटन विवरण के पैरा 1.5 में प्रकाशित है, मैसर्स पेट्रो अरालडाइट द्वारा दिए गए विचार निम्नानुसार हैं :-

1. यह प्रतिवादी एक संयुक्त उद्यम कम्पनी है जिसकी स्थापना चेन्नई, तमिलनाडु में 30,000 टन प्रति वर्ष क्षमता वाले एक विश्व श्रेणी के संयंत्र में इपोकसी रेजिन का विनिर्माण करने के लिए की गई थी ताकि वह न केवल घरेलू बाजार को अपितु निर्यात बाजारों को आपूर्ति कर सके। इस संयुक्त उद्यम का संस्थापन सीबा स्पेशियलिटी कैमिकल्स - बासले, जो इपोकसी रेजिन विनिर्माण में विश्व-स्तर का लीडर है और अपने 'अरालडाइट' ब्रांड नाम से विख्यात है, की तकनीक से सीबा इंडिया प्रा. लि. द्वारा किया गया था। इस संयुक्त उद्यम में 76% हिस्सा सीबा इंडिया प्रा. लि. का है और शेष 24% हिस्सा इसके संयुक्त उद्यमी साझेदार मैसर्स तमिलनाडु पेट्रोप्रोडक्ट्स लि. का है। चेन्नई स्थित यह संयंत्र वर्ष 1999 में चालू हुआ।
2. जांच अवधि के दौरान, वे अपने उपयोग हेतु बिस्फेनोल-ए के एक प्रत्यक्ष आयातक रहे हैं। इपोकसी रेजिन के अपने स्वयं के विनिर्माण के लिए बिस्फेनोल-ए का महत्वपूर्ण उपयोगकर्ता होने के कारण एक हितबद्ध पार्टी के रूप में, उन्होंने दिनांक 27 अप्रैल, 2000 के प्रारंभिक निष्कर्षों के जवाब में दिनांक 5 जून, 2000 की आयातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में निम्नानुसार अपने विचार प्रस्तुत किए थे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर की गई याचिका में उन्हें एक हितबद्ध पार्टी के रूप में नहीं दर्शाया गया था।

(क) बाजार का बदला हुआ परिदृश्य

चूंकि यह संयंत्र वर्ष 1999 के मध्य में चालू हुआ था, इसलिए बिस्फेनोल-ए के बाजार खपत संबंधी परिदृश्य में पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं जैसाकि निम्नलिखित सारणी से देखा जा सकता है:-

(टनो में)

	1997-98	1998-99
आयात	897	1376
उत्पादन	4192	5242
कुल (आयात + उत्पादन)	5089	6618

यह दर्शाता है कि 1997-98 और 1998-99 के बीच कुल खपत (निर्यातों को घटाकर) में 30% वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उत्पादन में 25% की वृद्धि हुई है। मुख्य रूप से, 1998-99 के दौरान स्थानीय उत्पादन ने 100% क्षमता उपयोगिता को पार किया है। इसलिए, यह बिस्फेनोल-ए बाजार में हुई समूची वृद्धि को दर्शाता है, और घरेलू उपलब्धता में आई कमी को पूरा करने के लिए आयातों में वृद्धि हुई है। एक-मात्र स्थानीय उत्पादक से प्राप्त बिस्फेनोल-ए के एक प्रमुख उपभोक्ता के रूप में और वर्ष 1998-99 के दौरान अपने अंतिम उत्पादों के निर्यात हेतु अग्रिम लाइसेंसिंग प्रणाली के जरिए आयातों के जरिए इस प्रतिवादी के प्रवेश से परिवर्तित बाजार परिदृश्य में पर्याप्त योगदान मिला है।

ख घरेलू उत्पादकों को हुई अनुमानित क्षति:

1. विकसित हो रहे बाजार में आयातों में मात्र वृद्धि को एक मात्र घरेलू उत्पादक को हो रहे नुकसान के रूप में नहीं लिया जा सकता है जब उसकी क्षमता का पहले ही पूर्ण रूप से उपयोग हो रहा है। बाजार में और वृद्धि होने के साथ ही यह अनवार्य हो जाता है कि आयातों में तब तक और भी वृद्धि होती रहेगी जब तक कि घरेलू क्षमता को बढ़ाया न जाए।
2. बिस्फेनोल-ए के लिए समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कीमतें न केवल इसके विनिर्माण में प्रयुक्त आवश्यक निविष्टियों अर्थात् फिनोल और एसीटोन की कीमतों के उतार-चढ़ाव पर आधारित हैं बल्कि प्रमुख उपभोक्ता बाजारों अर्थात् अन्य के अलावा इपोकसी रेजिन और पोलिकारबोनेट के घटनाक्रम पर भी आधारित हैं।

3. याचिकाकर्ता ने वित्तीय वर्ष 1999-2000 की प्रथम छमाही के दौरान बिक्री वसूली की मात्रा निम्नतर दर्शायी थी और संयंत्र के बंद/खराब होने के कारण निम्नतर उत्पादन विशेषकर शुरुआती महीने में दिखाया था उस समय घरेलू आपूर्ति करना एक समस्या बन गई थी और आयातों का सहारा लेना पड़ा था ।

(ग) उत्पाद की किस्म और गुणवत्ता

1. याचिकाकर्ता द्वारा आपूर्ति की गई बिसफिनोल-ए केवल पत्री के रूप में है जबकि चालू अंतर्राष्ट्रीय मानक प्रिल किस्म का है । विनिर्माण प्रक्रिया के विचार से ^{इपोक्सी} रेजिन्स की यह किस्म विनिर्माण में अपनी जटिलताओं के कारण महत्वपूर्ण है ।
2. प्रिल आकार सुरक्षा और पर्यावरण के विचार से रखरखाव, ढुलाई और निस्सारण निपटान की दृष्टि से भी उच्चकोटि का है और इसके परिणामस्वरूप उपयोगिता और नाइट्रोजन खपत स्तर के न्यूनतम होने के कारण इसका संयंत्र संचालन अधिक लागत प्रभावी भी है ।
3. उपर्युक्त के अलावा स्थनीय रूप से उपलब्ध फ्लेक में यह दोष है कि यह टूटे हुए स्थान से बहुत बड़े अनुपात में बारीक चूर्ण पैदा करता है जो विभिन्न फिल्टरों और पाइप लाइनों को जाम कर देता है जिससे संयंत्र का काम रुक जाता है और यह धूल और सुरक्षा संबंधी खतरा भी पैदा करता है ।
4. उत्पाद की गुणवत्ता (विशेषकर रंग) और एकरूपता को बनाए रखना स्थानीय उत्पादक के लिए एक समस्या बनी हुई है । यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि इपोक्सी रेजिन्स अंतर्राष्ट्रीय मानदंड ~~के~~ हैं और यह प्रमुख बाजार क्षेत्रों में हाई-टेक कोटिंग, सिविल इंजीनियरिंग, स्वचालित टूलिंग और चेपदार प्रयोगों के लिए बढ़ती हुई निश्चित मांग को पूरा कर सकता है । हालांकि प्रतिवादी इस प्रयोजन से याचिकाकर्ता के साथ काम कर रहा है फिर भी यह आवश्यक है कि आयातित उन्नत बिसफिनोल-ए के उपयोग को पाटनरोधी शुल्क लगाकर प्रतिबंधित या हतोत्साहित न किया जाए ।

(घ) घरेलू उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता

1. इपोक्सी रेजिन के उत्पादनकर्ताओं को दुर्भाग्यवश चरम कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है उन्हें जहां एक तरफ बिसफिनॉल-ए पर पाटनरोधी शुल्कों का सामना करना पड़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ इसके विनिर्माण संबंधी निविष्टियों अर्थात् फिनॉल

- और एसिटोन पर रक्षोप्तय शुल्क लगा हुआ है। इसलिए इपोक्सी रेजिन के विनिर्माता इपोक्सी रेजिन्स के सीधे आयातों की तुलना में घरेलू बाजार में कम प्रतिस्पर्द्धी हैं।
2. यह महसूस किया गया है कि आयातित फिनाॅल और एसिटोन के प्रचलित आयात कीमत संबंधी परिदृश्य (जांच अवधि के दौरान) के आधार पर और पर्याप्त विनिर्माण लागत पर विचार करते हुए घरेलू उत्पादक को बिना किसी क्षति के, जैसाकि उन्होंने दावा किया था, एक पर्याप्त लाभ मार्जिन प्राप्त कर सकता था। इसलिए आयातों के कारण अनुमानित क्षति के मामले पर ध्यानपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।
 3. सी आई एफ मूल्य पर कुल 46.38 % के आयात शुल्क के चालू स्तर के आधार पर यह माना गया है कि घरेलू उत्पादक के संरक्षण देने का स्तर आगे कोई पाटनरोधी शुल्क लगाए बिना पर्याप्त होगा।

(ड.) खपत मानदंड और मांग

1. बिसफिनाॅल-ए की मांग बेसिक लिक्विड (इपोक्सी) रेजिन के 0.70 किग्रा0 बिसफिनाॅल-ए प्रति कि0ग्रा0 के खपत-मानदंड पर आधारित है जैसाकि डीजीएफटी, वाणिज्य मंत्रालय ने पहले ही प्रमाणित किया है जो 31.3.2001 तक वैध है। अतिरिक्त बिसफिनाॅल-ए का उपयोग ठोस इपोक्सी रेजिन्स (इस प्रतिवादी ने जिसके निर्यात के लिए तदर्थ मानदंड लागू करने का प्रस्ताव किया है) के विनिर्माण में होता है जो ठोस इपोक्सी रेजिन का 0.25 कि0ग्रा0 बिसफिनाॅल-ए प्रति कि0ग्रा0 खपत करता है।
2. वर्ष 2000 में क्षमता उपयोग का 20-25 % का वर्तमान स्तर बढ़कर वर्ष 2002 में 45.50 % तक होने से बिसफिनाॅल-ए की चालू वार्षिक खपत का स्तर लगभग 3500 टन से बढ़कर 2002 के दौरान 7000 टन हो जाएगा। उसका निर्यात कुल उत्पादन का 30 % है और यह अनुमान है कि यह अनुपात अगले दो वर्षों के लिए बना रहेगा। केवल निर्यात के लिए वर्ष 2000 के दौरान बिसफिनाॅल-ए की हमारी 900 टन की वर्तमान खपत भी वर्ष 2002 में दोगुना होकर लगभग 1800 टन हो जाएगी।
3. निर्यात में बढ़ोत्तरी और घरेलू बाजार में वृद्धि के साथ कुछ वर्षों में पूरी क्षमता पर हम लगभग 16000 टन बिसफिनाॅल-ए की खपत का अनुमान लगाते हैं जोकि बिसफिनाॅल-ए के घरेलू उत्पादन की एकाधिकार वाली क्षमता से बहुत अधिक है।
4. हमारा मानना है कि इपोक्सी रेजिन उद्योग के घरेलू क्षेत्र और विकास को बढ़ाया जा सकता है अगर आयातित बिसफिनाॅल-ए किसी पाटनरोधी शुल्क के बिना (सामान्य शुल्क संरक्षण के साथ भी) एक उचित कीमत पर उपलब्ध हो। इसका एक कारण यह भी है कि मौजूदा घरेलू क्षमता का उपयोग पहले ही पूर्णतः हो रहा है। मुक्त और

खुली बाजार स्थिति का होना घरेलू और निर्यात बाजारों के उपयोगकर्ताओं के हित में है। इससे इनकी वृद्धि होगी और यह बिसफिनॉल-ए के एकमात्र घरेलू उत्पादक के भी हित में है, जिनको बड़े बाजार आकार से लाभ मिल रहा है और उसे विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्द्धी बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

(च) निर्यात

इस प्रतिवादी द्वारा प्रस्तुत इपोक्सी रेजिन के निर्यातों के ब्यौरे निम्नानुसार है:

वर्ष	मात्रा टन में	मूल्य (एफओबी/अमरीकीडालर)
1996-97	0	0
1997-98	0	0
1998-99	0	0
जांच अवधि(अप्रैल, 98 से सितम्बर, 99)	541.48	***

13. हेल्म इंडिया प्रा० लि० द्वारा व्यक्त विचार

जैसाकि प्रकटन विवरण के पैरा VII में उल्लेख किया गया है, हेल्म इंडिया ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

1. हेल्म इंडिया, हेल्म एजी, जर्मनी की 100% स्वामित्ववाली एक सहायक कंपनी है जो रसायनों, भेषजों, पोषक खाद्य संयोजी पदार्थों की मांग (निर्यात और आयात) को पूरा करने में लगी है। बेयर एजी, जर्मनी ने हेल्म एजी, जर्मनी को यूरोप तथा भारत में बिसफिनॉल-ए के एक निर्यातक और वितरक के रूप में अधिकृत किया है। भारतीय कारोबार का संचालन उसकी सहायक कंपनी मै. हेल्म इंडिया प्रा. लि. की मध्यस्थता से किया जाना है। मै. हेल्म इंडिया प्रा. लि. ने अपनी प्रमुख कंपनी मै. हेल्म एजी जर्मनी को पिछले कुछ वर्षों के दौरान मुख्य रूप से चीन के बाजार के लिए केसर पैट्रोप्रोडक्ट्स बिसफिनॉल-ए का निर्यात भी किया है।
2. भारत में बिसफिनॉल-ए की घरेलू खपत वर्ष 98-99 में 30% बढ़ी है जबकि उसी अवधि में उत्पादन क्षमता में केवल 25% वृद्धि हुई है जिससे जांच अवधि के दौरान बिसफिनॉल-ए की कमी हो गई है।

पोलीकार्बोनेट रेजिन्स और इपोक्सी रेजिन्स के उत्पादन में वृद्धि के कारण भारत में बिसफिनॉल-ए की मांग में लगातार वृद्धि हो रही है। पोलीकार्बोनेट रेजिन्स की मांग मुख्य रूप से स्वचालित यंत्रों, कंज्यूमर प्लास्टिक्स और विशेषकर कम्पैक्ट डिस्क के लिए प्रयुक्त उच्च संघात वाले प्लास्टिक के उत्पादन के लिए होती है।

बिसफिनॉल-ए का दूसरा सबसे अधिक उपायोग इपोक्सी रेजिन्स में होता है जिसका अंत्य प्रयोग लोचशील पैकेजिंग, चेपदार पदार्थों, लेमिनेट्स, पेंट्स तथा बिजली के संघटकों इत्यादि के पैक करने में किया जाता है जिससे अन्ततः बिसफिनॉल-ए की मांग में वृद्धि हुई है।

विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्द्धा और गुणवत्ता के प्रति सजगता में वृद्धि को देखते हुए ऊपर उल्लिखित उत्पादों के घरेलू उत्पादक अच्छी गुणवत्ता वाली बिसफिनॉल ए की प्रतिस्पर्द्धा कीमतों पर और समय पर सुपुर्दगी की मांग कर रहे हैं जिसमें भारतीय उत्पादक चूक कर रहा है।

अन्य तर्क

1. सामान की अनुपलब्धता

केसर भारतीय बाजार में बिसफिनॉल-ए की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने में असमर्थ था जिसका कारण जांच अवधि के दौरान उसके पास बिसफिनॉल-ए की सीमित उपलब्धता थी क्योंकि उसके कैंटालिस्ट में कुछ खराबी थी जिसके परिणामस्वरूप जनवरी, 99 से उसके उत्पादन में गिरावट आ गई जो संलग्न फोर्स मेजर प्रमाण पत्र से स्पष्ट है जिसे भारतीय मर्चेंट चेम्बर से इस उत्तरदाता ने उपलब्ध कराया था जिसके कारण जनवरी, 99 के दौरान 108 मी० टन के अपने निर्यात आर्डर रद्द करने पड़े।

2. कीमत

दिनांक 24 अप्रैल, 2000 की अधिसूचना के पैराग्राफ 10 के अनुसार भारत में बिसफिनॉल-ए की औसत सी आई एफ निर्यात कीमत 44.99 रु० थी। हमारे परिकलन के अनुसार यह कीमत सी आई एफ भारतीय पत्तन (औसत विनिमय दर 39.18 रु० के आधार पर 1150/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन के समतुल्य है। समुद्री भाग = 50/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन, पत्तन पर रखरखाव प्रभार = 10अमरीकी डालर प्रति मी० टन, अंतर्राज्यीय भाड़ा = 15/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन की दर से लागत में कटौती के बाद कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत 1075/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन थी।

3. सामान्य मूल्य - यूरोपीय संघ में घरेलू कीमत

जांच अवधि के दौरान यूरोपीय संघ में औसत घरेलू कीमत कारखाना द्वारा स्तर पर 1060/- अमरीकी डालर प्रति मी० टन के समतुल्य थी। 1075/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन की कारखाना द्वारा पर निर्यात कीमत की तुलना यूरोपीय संघ में कारखाना द्वार पर घरेलू कीमत (सामान्य माल्य) 1060/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन के साथ की जानी है।

घरेलू कीमत का निर्धारण

एक स्वतंत्र रसायनिक सूचना सेवा 'सीआईएस लोर' द्वारा प्रकाशित उत्तर-पश्चिमी यूरोप (एनडब्ल्यूई) के मुक्त सुपुर्दगी (एफडी) के आधार पर घरेलू कीमतों पर विचार करने से जांच अवधि के दौरान औसत 'मुक्त सुपुर्दगी कीमत' 1100/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन के समतुल्य थी।

लगभग 40/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन औसत अंतर्राज्यीय भाड़ा घटाने के बाद कारखाना द्वारा स्तर पर औसत घरेलू कीमत 1060/-अमरीकी डालर प्रति मी० टन थी जिस पर इस उत्तरदाता ने यह निष्कर्ष निकाला है कि निर्यात कीमत सामान्य मूल्य से सर्वाधिक थी।

4. गुणवत्ता

केसर उच्च फिनोल मात्रा तथा गहरे रंग के बारे में अपनी गुणवत्ता में अनियमित रहे हैं जो अंतिम उत्पाद तथा स्थानीय विनिर्माताओं की प्रतिष्ठा को प्रभावित किया करते थे । जिससे उन्हें बेयर की बेहतर किस्म की बिसफिनोल-ए का आयात करने पर बाध्य होना पड़ा ।

5. सामग्री की किस्म

केसर द्वारा दी गई फ्लेक किस्म पर्यावरणीय रूप से उपयुक्त नहीं होती थी क्योंकि कई मामलों में बारीक टूटे हुए फ्लेकों का काफी बड़ा अनुपात होता था जिससे संयंत्र संबंधी काफी समस्याएं तथा धूल की स्थिति उत्पन्न होती थीं ।

इन कारणों से कई उत्पादकों को बेयर सामग्री का आयात करने के लिए बाध्य होना पड़ा जो प्रिल रूप में थी और जिसे हैंडल करना आसान था और पर्यावरण के लिए काफी सुरक्षित थी ।

निष्कर्ष

1. उपर्युक्त कारणों को देखते हुए यह महसूस किया गया कि बेयर द्वारा कोई पाटन रोधी क्रियाकलाप नहीं किए गए ।
2. भारतीय उपभोक्ताओं को बढ़ावा देने के लिए सेवा करने की मंशा से उनको अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं का बाजार में प्रचलित कीमतों पर निर्यात किया गया और बदले में उनके उत्पादों को भारत में तथा अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रतिस्पर्द्धी बनाया गया ।
3. अतः अनुरोध है कि बेयर ए जी, जर्मनी से बिसफिनोल-ए को शामिल करते हुए दिनांक 6.6.2000 की जो पाटनरोधी अधिसूचना सं. 85/2000 जारी की गई, उसे समाप्त किया जाए ।

14. प्राधिकारी की स्थिति

प्राधिकारी ने क्षति संबंधी सभी सूचकों को अंतिम निर्धारण के समय ध्यान में रखा है । इसमें क्षति के निर्धारण के लिए पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के तहत विनिर्दिष्ट सभी संबंधित सिद्धांत विहित हैं अर्थात् पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव तथा घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री, लाभ बाजार-हिस्से आदि पर उसका प्रभाव घरेलू उद्योग के लिए समान वस्तु की क्षति-रहित कीमत का निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने सभी आवश्यक कारकों जैसे कच्चे माल का उपयोग, उपयोगिताओं का प्रयोग आदि तथा निवेश और क्षमता उपयोग जैसे कारकों सहित जांच की अवधि के दौरान वास्तविक व्यय का भी समुचित रूप से विश्लेषण किया । घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत का निर्धारण याचिकाकर्ता द्वारा लगाई गई पूंजी पर उपयुक्त आय पर विचार करने के बाद किया गया है । क्षति मार्जिन का परिकलन करने के

लिए घरेलू उद्योग की कारखाना द्वार पर क्षति रहित कीमत की तुलना आयातित माल के पहुंच मूल्य के साथ की गई है।

आयातों की मात्रा, उत्पादन, क्षमता तथा क्षमता उपायोग, बिक्री तथा बाजार का हिस्सा अंतर्देश स्टॉक संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य तथा याचिकाकर्ता की बिक्री कीमत निम्नानुसार हैं-

(क) आयातों की मात्रा

संकेतक	1997-98	1998-99	1999-00 (अप्रैल - सित.) 99- 6 महीने	अक्तू.-मार्च. (6 महीने)	1999-2000	जांच की अवधि अप्रैल- 98-सित.99
आयात(मी.टन)						
ताइवान	592	127	449	191	624	560
यूरोपीय संघ	162	1194	350	853	1203	1544
अन्य देश	143	55	58	36	94	113
कुल आयात	897	1376	857	1080	1921	2217

(ख) आयातों का पहुंच मूल्य

पहुंच मूल्य रू./किग्रा. (क)ताइवान		63	59.81	55.88		61.40
(ख)यूरोपीय संघ		61.74	61.49	55.13		61.6

(ग) उत्पादन तथा क्षमता उपायोग

क्षमता (मी.टन)	5000	5000	2500	3500	6000	7500
उत्पादन (मी.टन)	4192	5242	2705	3442	6147	7947
क्षमता उपयोग %	83.34	104.84	108.2	98.34	102.45	105.96

(घ) बिक्री तथा बाजार शेयर

स्थानीय (मी.टन)	2123	3222	2447	3551	5998	5669
मांग(मी.टन)	3020	4598	3304	4631	7919	7886
आयातों का हिस्सा %	29.7	29.9	25.9	23.3	24.2	28
पाटित आयातों का हिस्सा %	24.9	28.7	24	22.5	23	26
याचिकाकर्ता का हिस्सा %	70.2	70	74.06	76.67	75.7	71.8
घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतें (रु./मी.टन)	***	***	***		***	***
उत्पाद शुल्क सहित						

(ड.) अंतशेष स्टॉक

अंत शेष स्टॉक	323.3	126.6	384.22	315.375	699.59	510.82
---------------	-------	-------	--------	---------	--------	--------

15. उपर्युक्त संकेतकों से निम्नलिखित का पता चलता है:-

1. घरेलू उद्योग द्वारा बिसफिनोल ए के उत्पादन में 1997-98 की तुलना में 1998-99 में 28 प्रतिशत वृद्धि तथा 1998-99 की तुलना में 17.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई ।
2. 1998-99, 99-2000 तथा जांच की अवधि में क्षमता उपयोग 100 प्रतिशत को पार कर गया जांच की अवधि के दौरान क्षमता उपयोग 105.96 प्रतिशत था ।
3. संस्थापित क्षमता 1998-99 में 5000 मी.टन थी जो बढ़कर 1999-2000 में 6000 मी.टन तक हो गई जबकि लाइसेंस शुदा क्षमता 1999-2000 में 5000 मी.टन से बढ़कर 20,000 मी.टन तक हो गई ।
4. 1997-98 की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्रियों में 1998-99 में 51.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई और 1998-99 की तुलना में 1999-2000 में 86 प्रतिशत की वृद्धि हुई । 1997-98 के स्तर की तुलना में जांच की अवधि के दौरान इनमें महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है ।
5. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्तियों में 1997-98 की तुलना में 1998-99 में 15.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई और जांच की अवधि में 1997-98 की तुलना में 16.08 प्रतिशत की वृद्धि हुई ।
6. याचिकाकर्ता को बाजार हिस्सा 1997-98 में 70.2 प्रतिशत था जो जांच अवधि में बढ़कर 71.8 प्रतिशत हो गया ।

अतः घरेलू उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले सभी महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतकों में जांच की अवधि के दौरान महत्वपूर्ण सुधार दर्शाया है ।

ज) क्षति के बारे में निष्कर्ष

16. जांच के दौरान प्राधिकारी के ध्यान में निम्नलिखित पहलू भी सामने आए:-

- i) मै. केसर पैट्रो प्रोडक्ट्स लि. (जैसा कि प्रारंभिक जांच निष्कर्षों के पैरा 3 में बताया गया है) 5000 मी.टन बिसफिनोल-ए का उत्पादन करने की क्षमता रखते हैं जिसमें से 3600 मी.टन की बिक्री घरेलू बाजार में की जाती है। मूल कच्ची सामग्री फिनोल है जिसकी आवश्यकता संबद्ध वस्तुओं के निर्माण में होती है और इस प्रकार रक्षोपाय शुल्क लगता है। इस प्रकार बिसफिनोल-ए के विनिर्माण की लागत में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उत्पादन की लागत की तुलना में और वृद्धि हुई है। हाल ही में याचिकाकर्ता को ग्राहकों को पूर्व सूचना दिए बिना अपने संयंत्रों को बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ा जिससे उन्हें काफी समय तक बिसफिनोल-ए की आपूर्ति नहीं की जा सकी।
- ii) बिसफिनोल-ए के एक प्रमुख उपयोक्ता अर्थात् मै. पैट्रो-अरालडाइट प्रा. लि., चेन्नई ने बताया है कि वर्ष 2000 में वर्तमान 20-25 प्रतिशत के क्षमता उपयोग स्तर को बढ़ाकर वर्ष 2002 में 40-50 प्रतिशत करने से उनकी बिसफिनोल-ए की खपत जो इस समय लगभग 3500 मी.टन है, बढ़कर वर्ष 2002 में 7000 मी.टन हो जाएगी। उनके निर्यात कुल उत्पादन का 30 प्रतिशत तक हैं और आशा है कि यह अनुपात अगले 2 वर्षों तक बना रहेगा। इस समय वर्ष 2000 के दौरान ही निर्यात के लिए उनकी बिसफिनोल-ए की खपत 900 टन है जो वर्ष 2002 में लगभग दोगुनी अर्थात् 1800 मी.टन हो जाएगी। निर्यात तथा घरेलू बाजार में वृद्धि होने से कुछेक वर्षों में पूर्ण क्षमता प्राप्त करने पर वे लगभग 16,000 मी.टन बिसफिनोल-ए की खपत की अपेक्षा करते हैं जो स्थानीय बिसफिनोल-ए के उत्पादक के एकाधिकार की क्षमता से कहीं अधिक है।

(iii) इंडियन कैमिकल मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन ने प्राधिकारी को प्रस्तुत किए गए अपने विचारों में यह बताया है कि बिसफिनोल-ए का उत्पादन प्रतिस्पर्धी स्तर पर न होने का एक प्रमुख कारण बड़े पैमाने पर किफायतों का न होना है। सरकार को एपोक्सी और अन्य बिसफिनोल आधारित अन्तिम उत्पादों के निर्यातों के लिए डीईपीबी दरें निर्धारित करनी चाहिए जिससे निर्यातकों को आयातों की तुलना में स्थानीय बिसफिनोल को तरजीह देने में मदद मिलेगी। सरकार को इलैक्ट्रॉनिक ग्रेड एपोक्सी रेजिन पर शुल्क को बढ़ाने पर भी विचार करना चाहिए। इससे बिसफिनोल-ए की अतिरिक्त मांग पैदा होगी।

प्राधिकारी का यह अभिमत है कि :

- (i) डीजीसीआईएस के आंकड़ों के अनुसार ई यू और ताइवान से आयातों की पंहुच कीमतें 1998-99 में 61.74 रु प्रति कि०ग्रा० और 63 रु प्रति कि०ग्रा० की थीं जबकि 98-99 में घरेलू उत्पाद की बिक्री कीमत (उत्पाद शुल्क को छोड़कर) *** रु प्रति कि०ग्रा० की थी। इसी प्रकार डीजीसीआईएस के आंकड़ों के अनुसार 99-2000 (अप्रैल-सितम्बर में ई यू और ताइवान से हुए आयातों का पंहुच मूल्य क्रमशः 61.49 रु प्रति कि०ग्रा० और 59.81 रु प्रति कि०ग्रा० के थे, जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत *** रु प्रति कि०ग्रा० की थी। जांच अवधि के दौरान ई यू और ताइवान की पंहुच कीमतें क्रमशः 61.6 रु प्र० कि०ग्रा० और 61.40 रु प्रति कि०ग्रा० की थीं

जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत *** रु० प्रति किग्रा० की थी । अतः सम्बद्धदेशों से हुए आयातों का पंहुच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी अधिक था, जिससे इन पाटित आयातों के कारण याचिकाकर्ता को होने वाली क्षति की पुष्टि नहीं होती है ।

पाटनरोधी नियमों के अनुबंध II (ii)में यह उल्लेख है कि "नियम 18 के उप नियम (2) में यथाउल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेगा कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमतों में अत्यधिक कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव का उद्देश्य कीमतों में अन्यथा पर्याप्त स्तर तक कमी लाना है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।

ऊपर यथानिर्दिष्ट पाटित कीमतें जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की बिक्री कीमतों से काफी अधिक रही हैं । इसलिए पाटित आयातों के कारण कीमत में कटौती अथवा क्षति का प्रश्न नहीं उठता ।

(ii) वर्ष 1998-99 अर्थात् जांच अवधि के पहले 12 महीनों में घरेलू उद्योग का अंतिम स्टॉक सबसे कम 126.6 मी० टन था जबकि इसी वर्ष कुल आयातों में 97-98 की तुलना में 53 % तक और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में 15.5 % तक वृद्धि हुई । उत्पादन उच्चार अर्थात् 5242 मी० टन का हुआ था ।

(iii) बिसफिनोल-ए की मांग 1997-98 में 3020 मी० टन से बढ़कर 1998-99में 4598मी० टन हो गई । 1999-2000 के लिए मांग 7919 मी० टन की है । 1998-99 में मांग स्तर में 97-98 की तुलना में 52 % की वृद्धि प्रदर्शित होती है । 1999-2000 में मांग स्तर में 98-99 के मांग स्तर की तुलना में 72 % की वृद्धि प्रदर्शित होती है। जैसा कि हितबद्धपक्षों द्वारा उल्लेख किया गया है कि भारत में बिसफिनोल-ए की मांग में पोलिकारबोनेट रेजिन और एपोकसी रेजिन का उत्पादन बढ़ने के कारण निरन्तर वृद्धि हो रही है ।

यद्यपि 98-99 में याचिकाकर्ता मांग को पूरा करने में समर्थ था, तथापि 1999-2000 में याचिकाकर्ता का उत्पादन 2705 मी० टन का हुआ था, जबकि मांग 3304 मी० टन की थी । 1999-2000 में याचिकाकर्ता का उत्पादन 6147 मी० टन का हुआ था, जबकि मांग स्तर 7919 मी० टन का था । पाटनरोधी नियमों के अनुबंध II (ii) में यह उल्लेख है कि पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेगा कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है । यह देखा जाता है कि मांग में पाटित आयातों का हिस्सा 97-98 में 24.9 % से बढ़कर 98-99 में 28.7 % हो गया है और 99-2000 (अप्रैल-सितम्बर, 99) में घटकर 24 % हो गया । 1999-2000(12 महीने) में पाटित आयातों का हिस्सा घटकर 23 % हो गया । 97-98 में याचिकाकर्ता का मांग में हिस्सा 72 % था जो 98-99में उसी स्तर पर बना रहा और तत्पश्चात् 1999-2000(12 महीने)में बढ़कर 74.06 % (अप्रैल-सितम्बर, 99)और 75.7 % हो गया ।

(iv) घरेलू उद्योग को 98-99 में (-177.54) लाख रु0 और 99-2000 में (-173.34) लाख रु0 का घाटा हुआ । तथापि, इन घाटों के बावजूद 1999-2000 की उनकी वार्षिक रिपोर्ट में लाइसेंसशुदा क्षमता में 5000मी0टन से 20,000 मी0 टन तक की उल्लेखनीय वृद्धि प्रदर्शित होती है, जोकि क्षति का कोई संकेतक नहीं है । उनकी स्थापित क्षमता भी 5000 मी0 टन से बढ़कर 6000 मी0 टन हो गई है । 29.11.2000 के अपने उत्तर में उन्होंने इस वृद्धि का संकेत नहीं दिया है । उन्होंने केवल यह बताया है कि उत्पादन में वृद्धि तकनीकी नवीकरण और अड़चनों के कारण हो सकती है जिनमें उन्होंने निवेश किया है ।

पाटनरोधी नियमों के पैरा (iv) अनुबंध II में निहित प्रावधानों के अनुसार संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक संकेतकों का मूल्यांकन शामिल होगा जो घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं और इनमें बिक्रियों लाभ, उत्पादन संबंधी बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेशों पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक इत्यादि शामिल होंगे । जैसाकि पैरा 13(ड.) में उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग ने सभी प्रमुख आर्थिक संकेतकों के संबंध में सुधार और बढ़ोतरी प्रदर्शित की है ।

17. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से सम्बद्ध वस्तु के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है । कुछेक हितबद्ध पक्षों ने यह तर्क दिया है कि बिसफिनोल-ए पर आयात शुल्क में वृद्धि करने से एपोक्सी रेजिन इत्यादि की कीमतों में बढ़ोतरी शुरू हो जाएगी । जिससे निर्यातों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । हितबद्ध पक्षों ने बताया है कि फैनोल और एसिटोन की कीमतों में गिरावट आई है और खासतौर पर फैनोल की कीमतें 40 रु0 प्रति किग्रा0 से घटकर 29रु0 प्रति किग्रा हो गई हैं । एपोक्सी रेजिन की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में कमी आई है और इनमें आगे और कमी आ रही है । अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कम कीमतों के कारण कोई भी ग्राहक एपोक्सी के स्थानीय विनिर्माताओं को उच्चतर कीमत प्रदान नहीं करेगा । व्यापारियों द्वारा एपोक्सी रेजिन का आयात किया जा रहा है और उसे एपोक्सी विनिर्माताओं की कीमत से कम कीमतों पर बेचा जा रहा है । प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता द्वारा जिन कीमतों/दरों पर फैनोल और एसिटोन की खरीद की गई है उनमें 1995-96 से गिरावट आई है और वे निम्नानुसार थीं :-

वर्ष	फैनोल (रु0/मी0टन)	एसिटोन(रु0/मी0टन)
1995-96	***	***
1996-97	***	***
1997-98	***	***
1999-00(30.9.99 तक)	***	***
जांच अवधि(अप्रैल 1998-सित0 1999)	***	***

याचिकाकर्ता ने यह बताया है कि फैनोल और एसिटोन की कीमतें याचिकाकर्ता के नियंत्रण के बाहर हैं और जांच अवधि के बाद उनमें अत्यधिक वृद्धि हुई है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यदि याचिकाकर्ता कीमतों में गिरावट की अवधि के दौरान अपने उत्पाद का प्रतिस्पर्धी विनिर्माण करने में असमर्थ था तो उसके लिए मूलभूत कच्ची सामग्री की कीमतों में वृद्धि होने से जांचोत्तर अवधि में ऐसा करना और अधिक कठिन होगा।

झ. कारणात्मक संबंध

18. * प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी प्रमुख मापदण्डों जैसे कि उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री के संबंध में सुधार प्रदर्शित किया है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। 1999-2000 में उन्होंने अपनी लाइसेंस-शुदा और स्थापित क्षमता को भी बढ़ाया है। अतः पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा है। कीमत प्रभाव अर्थात् क्या पाटित आयातों से भारत में समान उत्पाद की कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है, की जांच करते समय प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ई यू और ताईवान दोनों देशों से बिसफिनोल-ए का पंधुच मूल्य जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की निवल बिक्री कीमत से काफी अधिक रहा है। अतः उक्त आयातों से कीमत में कटौती होने अथवा याचिकाकर्ता को वास्तविक क्षति पंधुचने का प्रश्न नहीं उठता। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को सम्बद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति नहीं पंधुची है।

19. अंतिम निष्कर्ष

पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:-

(क) ई यू और ताईवान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित बिसफिनोल-ए का भारत को निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिससे पाटन हुआ है।

(ख) घरेलू उद्योग को जितना घाटा हुआ उतनी सीमा तक उसे वास्तविक क्षति हुई है हालांकि सभी अन्य प्रमुख आर्थिक संकेतकों में सुधार प्रदर्शित हुआ है ।

(ग) तथापि घरेलू उद्योग को हुई क्षति और सम्बद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध प्रमाणित नहीं हो सका ।

20. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पंधुच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत, सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथाआकलित निर्धारणमूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे ।
21. इसलिए यूरोपीय संघ तथा ताइवान के मूलके अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्ष 2907.23 के तहत वर्गीकृत बिसफिनोल-ए जो इस जांच की विषयवस्तु है, के आयातों पर 27 अप्रैल, 2000 की अधिसूचना सं 47/1/99 के तहत अनन्तिम रूप से सिफारिश किए गए पाटनरोधी शुल्क को वापस लेना आवश्यक समझा जाता है ।
22. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, निर्दिष्ट प्राधिकारी नियम 18, उपनियम (4) के प्रावधानों के अनुसार अनन्तिम शुल्क को वापस लेने की सिफारिश करते हैं पहले से लगाए गए और वसूल किए गए अनन्तिम शुल्क, यदि कोई हों, को वापस कर दिया जाएगा ।
23. उपरोक्त के अधीन रहते हुए प्राधिकारी 27 अप्रैल, 2000 के प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं ।
24. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील उपरोक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी ।

एल.वी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**NOTIFICATION**

New Delhi, the 6th December, 2000

FINAL FINDINGS

Subject: Anti-Dumping investigations concerning import of Bisphenol-A from the European Union and Taiwan.

No. 47/1/99-DGAD — Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed subsequent to the preliminary findings:
 - (a) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified Preliminary Findings vide notification no. 47/1/99-DGAD dated 27th April, 2000 with regard to anti-dumping investigations concerning imports of Bisphenol-A from EU and Taiwan and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;
 - (b) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the said findings within forty days from the date of the letter;
 - (c) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 19/7/2000. All parties presenting views orally were requested to file written submissions of the views expressed orally at the time of the public hearing. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rejoinders, if any. The petitioner and members of the user industry were present at the oral hearing. The exporters from the subject countries did not attend the oral hearing. The hearing was attended by the representatives of the Delegation of the EC and the Taipei Economic and Cultural Centre. It is noted by the Authority that the domestic industry M/s Kesar Petroproducts Ltd., gave no written submissions of the views expressed by them at the time of the hearing. In a letter dated September 12, 2000 received by the Directorate General of Anti-Dumping only on 26th September 2000, the petitioner has sought to highlight certain parameters concerning these investigations. No reference has been made therein to the Public Hearing conducted by the Authority.

As per the provisions contained in Art 6.3 of the WTO Agreement on Anti-Dumping, oral information shall be taken into account by the authorities only so far as it is subsequently reproduced in writing and made available to other interested parties. The Authority therefore notes that the petitioner had no comments to offer at the time of the public hearing.

- (d) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted and arguments made by various interested parties;
- (e) M/s Petro Araldite Pvt Ltd., and M/s Bayer AG, Germany requested the Authority for a one-to-one hearing before finalization of the Disclosure Statement. M/s Petro Araldite Pvt Ltd., filed written submissions of the views expressed by them in the said hearing. Bayer AG also requested the Authority to allow their distributor and exporter Helm India Pvt Ltd., to present the relevant facts and figures. In the personal hearing allowed to them on the same date viz., 13th November 2000, Helm India presented certain facts and gave written submissions of those facts as presented by them at the time of the one-to-one hearing. Submissions made by the petitioner in a hearing granted to them on 1st December 2000 have also been considered by the Authority.
- (f) The arguments raised by the petitioners and other interested parties have been appropriately dealt with in the preliminary findings and/or these findings,
- (g) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same, have been duly considered in these findings;
- (h) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

2. The product involved in the present investigation is Bisphenol-A originating in or exported from the European Union and Taiwan. Bisphenol-A finds uses in Phenolic resins, Epoxy resins, Polycarbonate resins and Unsaturated Polyester resins and is classified under Customs sub-heading 2907.23 of the Customs Tariff Act, 1975. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

The Authority confirms the preliminary findings on product under consideration.

C. LIKE ARTICLES

3. Rule 2(d) of the anti-dumping rules specifies that "Like Articles" means an Article which is identical or alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an Article, another Article, having characteristics closely resembling those of the articles under examinations.

The petitioners had claimed that the Bisphenol-A perused and sold by them and that imported from the subject countries are being used interchangeably by customers in India. The process and technology from manufacturing the product all over the world is similar in terms of machinery, raw materials and manufacturing process except for minor differences such as additives. None of the interested parties have disputed the claims made by the petitioner.

Some interested parties have stressed on the quality differences between the imported Bisphenol A and that manufactured by the petitioner. A major importer viz., M/s Petro Araidite Ltd., has subsequently highlighted the issue of quality. However no evidence has been provided substantiating such submissions. The Authority notes that quality differential does not affect likeness of articles. On the other hand, the basic manufacturing process, applications and overall use of the product are similar. There is a high degree of interchangeability and consequently of competition between the imported product and that manufactured by the petitioner being the subject matter of this investigation.

There is no argument disputing that Bisphenol-A produced by the domestic industry has characteristics closely resembling the imported product and is substitutable by the Bisphenol-A imported from the subject countries both commercially and technically. Bisphenol-A produced by the domestic industry has been treated as Like Article to the product exported from European Union and Taiwan, within the meaning of Rule 2(d).

In view of the above, the Authority confirms the preliminary findings on Like Articles.

D. Domestic Industry

4. M/s Kesar Petroproduct Ltd., Mumbai has filed the petition. The petitioner is the sole producer of Bisphenol-A in India. None of the interested parties have disputed the standing of the petitioner to represent the domestic industry. The petitioner company therefore accounts for 100% of domestic production and has the required standing to file the petition under the Rules.

E. Period of Investigation:-

5. Investigations were carried out for the period starting from 1st April, 1998 to 30th September, 1999.

F. DUMPING:-

Exporters and Producers of the Subject Goods in the Countries of Origin:-

6. None of the exporters/producers of Bisphenol-A in the subject countries responded to the Authority's request for relevant information. In the post-preliminary stage of these investigations, M/s Bayer AG, Germany in a letter to the Authority stated that they had not received official information about the opening of these proceedings against Bayer AG, Germany nor did they receive a questionnaire. Information about these proceedings were received by them through the notification dated 27th April, 2000. They also asserted that Bayer AG does not directly export Bisphenol-A into India. Bayer AG acts through its authorized exporter and distributor Helm AG, Germany as well as through Helm's Indian subsidiary Helm India Pvt Ltd, Mumbai.

Bayer AG also requested the Authority to allow their distributor and exporter Helm to present the relevant facts and figures. In the personal hearing allowed to them also on 13th November

2000, Helm India presented certain facts and gave written submissions of these facts as brought out by them at the time of the personal hearing.

7. Normal Value:-

Taiwan

The Authority has examined Normal Value in relation to the subject goods in accordance with Rule 9A (1) (c). The assessment of Normal Value in Taiwan has been given at Para H.8 (I) and (ii) of the Preliminary Findings notified by the Authority on 27/4/2000. The constructed Normal Value of Bisphenol -A for exporters from Taiwan had been taken at USD ***/kg or Rs ***/per kg for the purpose of preliminary findings. The Authority has re-determined the constructed normal value in Taiwan for the purpose of final findings as USD ***/kg or Rs ***/kg at an average exchange rate of Rs 42.39=1USD during the period of investigation.

EU

The assessment of Normal Value in European Union has been given at Para H.9 of the Preliminary Findings. The Normal Value of Bisphenol -A for exporters from EU had been considered as USD ***/kg or Rs ***/per kg for the purpose of preliminary findings.

However Helm India Pvt Ltd at the time of the one-to-one hearing, gave written submissions of the views expressed by them at the said hearing. They submitted extracts of Bisphenol-A domestic prices in Europe as published by "ICIS -LOR" an independent chemical information service (copyright: Reed Business Information Ltd.,) and exchange rate pages published by the said agency. As per the information contained therein for the months of August 1998, November 1998, February 1999 and May 1999, the average stated domestic price of Bisphenol-A in the domestic market of Europe was USD ***/kg or Rs ***/kg at average exchange rates of 1USD=1.78DM and Rs 42.39=1USD during the period of investigation. Since the claim of average inland freight of USD ***/MT and documentary evidence thereof was made at the final stage of these investigations, the same is disallowed by the Authority.

8. Export Price:-

Taiwan and EU

Information as furnished by DGCIS has been relied upon by the Authority for determination of export price from the subject countries. The assessment of export price from Taiwan and the EU has been given at Para H. 10 of the Preliminary Findings. The ex-factory export price of Bisphenol -A after adjustments had been considered as Rs ***/per kg and Rs ***/kg for exporters in EU and Taiwan respectively for the purpose of provisional findings.

In the case of exporters of Bisphenol-A from Taiwan, the weighted average cif price of export as determined by the Authority was Rs ***/kg. After deductions on account of ocean freight @5%, insurance @0.5%, Commission @3% for the Indian agent, commission @3% for the agent in the exporting country and port handling charges @ 1%, the export price at ex-factory level comes to Rs ***/kg or USD ***/kg for exports of the subject goods from Taiwan.

In the case of exporters of Bisphenol-A from the EU, the weighted average price as determined by the Authority was Rs ***/kg. After deductions on account of ocean freight @5%, insurance @0.5%, Commission @3% for the Indian agent, commission @3% for the

agent in the exporting country and port handling charges @ 1%, the ex-factory price comes to Rs ***/kg or USD ***/kg for exports of the subject goods from the EU.

9. Views expressed by Domestic Industry:-

None of the exporters from the subject countries have provided information in the form and manner prescribed. The Designated Authority is fully justified in proceeding with the determination of normal value as per best available information in accordance with the Rules.

10. Dumping Margin:-

Authority's Position:-

The Authority followed the consistent practice of adopting the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I to the anti-dumping rules. Based on the normal value and export price as indicated above, the Authority assessed the dumping margins in case of all exporters from EU and Taiwan as given in the table below:-

Country	Exporter/Producer	Normal Value (USD/kg)	Export Price (USD/kg)	Dumping Margin %
EU	All exporters/producers	***	***	18.27%
Taiwan	All exporters/producers	***	***	38.8%

G. INJURY:-

11. Argument raised by domestic industry:-

The petitioner's views have been reflected in Para B. 2 of the Preliminary Findings, and vide their letter dated September 12, 2000 the domestic industry has stated inter alia that there has been a significant increase in the cost of production due to increase in input prices. The domestic industry has stated that phenol and acetone are major raw materials for producing Bisphenol-A. They account for about 85% of total raw material cost for the production of Bisphenol -A. Prices of phenol and acetone are beyond the control of the petitioner and have increased significantly during the post investigation period. Further prices of furnace oil and power have also increased very significantly which has resulted in significant increase in variable cost. This has led to significant increase in the total cost of production inspite of ever increasing production of the company. The cost increases are largely on account of increases in these inputs as a result of levies such as safeguard duty on phenol and acetone. The steep increase in the cost of production has resulted in nullifying the effect of the provisional anti-dumping duty imposed and the duty recommended is insufficient to protect the legitimate interests of the industry.

12. Arguments raised by M/s Petro Araldite Pvt Ltd , Chennai:-

As brought out in Para 1.5 of the Disclosure Statement, the views brought out by M/s Petro Araldite are as follows:-

1. This respondent is a joint venture company set up to manufacture epoxy resins in a world class plant at Chennai, Tamil Nadu, with a capacity of 30,000 Tons per annum to cater not only to the domestic market but also for export markets. This joint venture was promoted by Ciba India Pvt. Ltd. with the technology from Ciba Speciality Chemicals – Basle, the world leader in the epoxy resin manufacture and well known by its “Araldite” brand name. This joint venture has 76% share holding by Ciba India Pvt. Ltd. and balance 24% held by their joint venture partner M/S Tamil Nadu Petroproducts Ltd. This plant at Chennai went on stream during 1999.

2. During the period of investigations, they have been a direct importer for their own use of Bisphenol-A. As an interested party by virtue of being a significant user of Bisphenol-A for their own manufacture of epoxy resins, they had presented their views as follows vide their response to the importers questionnaire dated 5th June, 2000 in response to the Preliminary Findings dated 27th April, 2000. The Authority notes that they were not mentioned as an interested party in the petition filed by the domestic industry.

(a) Changed market scenario

Since the plant went on stream in mid, 1999, the market consumption scenario of Bisphenol-A has changed significantly. This is seen from the following table:

	Tons	
	1997-98	1998-99
Imports	897	1376
Production	4192	5242
Total (I+P)	5089	6618

This shows that apparent consumption (less export) grew by 30% between 1997-98 and 1998-99 while domestic production grew by 25%. Significantly, the local production during 1998-99 crossed 100% capacity utilisation. Hence, this is reflective of the overall growth in the Bisphenol-A market, and increase imports has held to bridge the gap in domestic availability. This respondents entry as a major consumer of Bisphenol-A drawn both from the only local producer and also by way of imports through the advance licensing route for exports of their end products during 1998-99 has significantly contributed to this changed market scenario.

(b) Presumed injury to domestic producers:

1. The mere increase in imports in a growing market cannot be taken as causing injury to the only domestic producer when their capacity is already fully utilised. With further market growth it is only inevitable that imports would go up further, unless domestic capacity is enhanced.

2. International traded prices for Bisphenol-A from time to time are based not only on the price movements of essential inputs in its manufacture namely, Phenol and Acetone but also the developments in the key users markets i.e. epoxy resins and polycarbonate among others.

3. The petitioners indicated lower sales volume realisation during the first half of fiscal 1999-2000, was reflected of lower output especially in the initial month due to plant shut down/problems when domestic supply was a problem and imports had to be resorted to. This negatively impacted on this respondents on production plants during that period.

(c) Product form and quality

1. Bisphenol-A supplied by the petitioner is in the form of flakes only while the current international standard is the prill form. This form is important in the manufacture of epoxy resins for its implications on the manufacturing process considerations.
2. The prill form is superior in terms of safety and environmental considerations for handling, transportation and effluent disposal and also results in more cost effective plant operations due to lower utilities and nitrogen consumption levels.
3. The flakes forms available locally apart from the above has the disadvantage of generating significant proportion of fines from broken place which choke up various filters and pipe lines causing plant delays and also posing dust and safety hazards.
4. Maintaining product quality (especially colour) and consistency has been a problem with the local producer. This is important to ensure that epoxy resins are upto international standards and can meet the increasingly exacting requirements of key market segments for high-tech coatings, civil engineering, automotive tooling and adhesive applications. While this respondent is working with the petitioner in this regard, it is important that the use of superior imported Bisphenol-A is not restricted or discouraged by imposition of anti-dumping duties.

(d) Domestic Industry Competitiveness

1. Epoxy resin producers are unfortunately at the receiving end where besides being faced with anti-dumping duties on Bisphenol-A, the inputs for its manufacture viz., phenol and acetone are subject to safeguard duties. This is epoxy resin manufacturers less competitive in the domestic market vis-à-vis direct imports of epoxy resins.
2. It is felt that based on the prevalent import price scenario (during the period of investigation) for imported phenol and acetone and considering adequate manufacturing costs, the domestic producer could have made a reasonable profit margin without running into losses as claimed. Therefore the presumed injury on account of imports needs a closer look.
3. Based on the current level of import duty cumulating to 46.38% on cif value, it is considered that the level of protection to the domestic producer should be adequate without imposing any further anti-dumping duty.

(e) Consumption Norms and Demand

1. Bisphenol-A requirements are based on the consumption norm of 0.70 kg Bisphenol-A per kg of Basic Liquid (Eoxy) Resin as already established with the DGFT, Ministry of Commerce valid upto 31/3/2001. Additional Bisphenol-A is used in manufacture of Solid Epoxy Resins (for whose exports this respondent proposes to apply for ad-hoc norms) which consumes 0.25 kg Bisphenol-A per kg of Solid Epoxy resin.

2. With increase in capacity utilisation levels from current 20-25% in year 2000 to 45-50% for year 2002, their Bisphenol-A consumption will go up from current annual level of nearly 3500 tons to 7000 tons during 2002. Their exports constitute 30% of total output and it is expected that this proportion will be maintained for the next 2 years. Our Bisphenol-A consumption for exports alone at present 900 tons during 2000 would also double to around 1800 tons in the year 2002.

3. At full capacity in a few years time, coupled with increased exports and growth in the domestic market, we expect to consume around 16000 tons of Bisphenol-A which is far beyond the capacity of the monopoly of the local Bisphenol-A producer.

4. We believe that the domestic size and growth of the epoxy resin industry can be enlarged if imported Bisphenol-A is available at a reasonable price (even with normal duty protection) without any anti-dumping duty. This is more so when existing domestic capacity is already fully utilised. Having a free and open market situation is in the interests of users- for domestic and export markets to grow- and also for the sole domestic Bisphenol-A producer- being benefited by a large overall market size and be motivated to become globally competitive.

(f) Exports

Details of epoxy resin exports made by this respondent are as follows:-

Year	Qty (tons)	Value (fob/USD)
1996-97	0	0
1997-98	0	0
1998-99	0	0
POI (Apr'98-Sep'99)	541.48	***

13. Views expressed by Helm India Pvt. Ltd.

As brought out in Para VII of the Disclosure Statement, Helm India made the following submissions:-

1. Helm India Pvt. Ltd. is a 100% owned subsidiary of Helm AG, Germany involved in indenting (export and import) of Chemicals, Pharmaceuticals, Feed food additives. Bayer AG, Germany has authorised Helm Ag, Germany as its exporters and distributor of Bisphenol-A in Europe as well as India. The Indian business is carried out through the intermediation of its subsidiary M/S Helm India Pvt. Ltd. The Helm India Pvt. Ltd. has also exported Kesar Petroproducts Bisphenol-A to their principals M/S Helm Ag Germany mainly for China market during the past several years.

2. The domestic consumption of Bisphenol A in India grew by 30% in 98-99 viz a viz the production capacity which only grew by 25% in the same period creating a shortage of Bisphenol A during the POI.

The demand for Bisphenol A in India has been growing steadily due to the increased production of Polycarbonate resins and epoxy resins. The demand for Polycarbonate resins is mainly for the production of high impact plastics used in automotive, consumer plastics and especially for compact disks.

The epoxy resins has the second largest use of Bisphenol A which has its end use in flexible packaging, adhesives, laminates, paints, encapsulants for electric components etc. which has in turn increased the demand for Bisphenol A.

In view of the Global competition and increased quality consciousness, the local producers for the above mentioned products have been looking for Bisphenol A of good quality at competitive prices and with timely delivery which was missing from the Indian producer.

Other Arguments:

1. Non-availability of material

Kesar was unable to meet the increasing demand of Bisphenol A in the Indian market due to the limited availability of Bisphenol A from their end during the period of investigation as they had problems with their catalyst which resulted in the drop of production from January, 99 onwards which is evident from the enclosed Force Majeure certificate which was provided this respondent from Indian merchant chambers which finally resulted in cancellation of their export order of 108 mt during January, 99.

2. Price

As per paragraph 10 of the notification dated 24th April, 2000 the average of CIF export of Bisphenol A into India was Rs. 44.99. As per our calculation this price is equivalent to USD 1150/- per mt, CIF Indian port (average exchange rate Rs. 39.18). After deduction of costs like ocean freight = USD 50/- per mt, port handling charges = USD 10/- per mt, inland freight = USD 15/- per mt the ex factory export price was USD 1075/- per mt.

3. Normal value – domestic price in the EU

The average domestic price in the EU during the time of investigation was equivalent to USD 1060/- per mt ex factory. The ex factory export price of USD 1075/- per mt is to be compared with the ex factory domestic price in the EU (normal value) of USD 1060/- per mt.

Determination of domestic price :

Considering the domestic prices on basis free delivered (FD) North-West Europe (NWE) published by "CIS Lor" being an independent chemical information service, the average 'free delivered price' was equivalent to USD 1100/- per mt during the time of investigation.

Deducting an average inland freight of approx. USD 40/- per mt the average domestic price on basis ex factory was USD 1060/- per mt., this respondent has come to the conclusion that the export price was ever higher than the normal value.

4. Quality:

Kesar has been erratic in their quality with regards to high Phenol content and dark colour which used to affect the final product and the reputation of the local manufacturers which prompted them to import Bisphenol A of better quality of Bayer.

5. Form of material :

The flake form offered by Kesar used to be environmentally unfriendly as in many cases there were significant proportion of fine broken flakes which caused considerable plant problems and dusty conditions.

These reasons prompted many producers to import Bayer material which was in prill form and was very easy to handle and much safer to the environment.

Conclusion :

1. In view of the above reasons it is felt that there was no dumping activity by Bayer.
3. Quality goods were exported at the prevailing market levels with an intention of serving the Indian consumers for their enhancement and in turn making them competitive with their products in India and internationally.
4. Hence it is requested that the anti dumping notification 85/2000 dated 06/06/2000 covering Bisphenol A from Bayer Ag, Germany should be withdrawn with immediate effect.

14. Authority's Position:-

The Authority has taken into account all indices regarding injury while doing the final determination. This involves all relevant principles for determination of injury as specified under Annexure II of the anti-dumping rules viz., the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market and its effect on the production, capacity utilisation, sales, profits, market share etc. of domestic industry. While determining the non-injurious price for the like article for the domestic industry, the Authority has made appropriate analysis of all the relevant factors such as usage of raw material, usage of utilities, etc., and the actual expenses during the period of investigation including factors such as investments and capacity utilisation. The Non-injurious price for the domestic industry has been determined considering a reasonable return on the capital employed by the petitioner. For calculation of injury margin, the ex-factory non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed value of the imported goods.

The quantum of imports, production, capacity and capacity utilisation, sales and market share, closing stocks, landed values of the subject goods from the subject countries and selling prices of the petitioner were as given below:-

(a) Quantum of Imports:-

Indicators	1997-98	1998-99	1999-00 (Apr-Sep 99 –6 months)	Oct- Mar'00 (6 months)	1999-2000	POI Apr 98- Sep 99
Imports (MT)						

Taiwan	592	127	449	191	624	560
EU	162	1194	350	853	1203	1544
Other countries	143	55	58	36	94	113
Total imports	897	1376	857	1080	1921	2217

b) Landed Values of imports:-

Landed Values Rs /kg						
(a) Taiwan		63	59.81	55.88		61.40
(b) EU		61.74	61.49	55.13		61.6

(c) Production and capacity utilisation:-

Capacity (MT)	5000	5000	2500	3500	6000	7500
Production (MT)	4192	5242	2705	3442	6147	7947
Capacity utilisation %	83.34	104.84	108.2	98.34	102.45	105.96

(d) Sales and Market Share:-

Local Sales (MT)	2123	3222	2447	3551	5998	5669
Demand (MT)	3020	4598	3304	4631	7919	7886
Share of imports %	29.7	29.9	25.9	23.3	24.2	28
Share of dumped imports %	24.9	28.7	24	22.5	23	26
Share of petitioner %	70.2	70	74.06	76.67	75.7	71.8
Selling prices of domestic industry (Rs/MT)	***	***	***		***	***

net of excise duty						
-----------------------	--	--	--	--	--	--

(e) Closing stocks:-

Closing stocks (MT)	323.3	126.6	384.22	315.375	699.59	510.82
---------------------------	-------	-------	--------	---------	--------	--------

15. The above indicators demonstrate the following:-

1. Production of Bisphenol-A by the domestic industry increased by 25% in 98-99 over 97-98 and by 17.2% in 99-2000 over that of 98-99.
2. Capacity utilisation exceeded 100% in 98-99, 99-00 and the POI. Capacity utilisation was 105.96 % in the POI.
3. Installed capacity increased from 5000MT in 98-99 to 6000MT in 1999-2000 while licensed capacity increased from 5000 MT to 20,000 MT in 99-2000.
4. Sales of domestic industry increased by 51.7 % in 98-99 over 97-98 and by 86% in 99-00 over 98-99. Sales increased significantly in the POI over the level of 97-98.
5. The net sales realisation of domestic industry increased by 15.5% in 98-99 over 97-98 and by 16.08% in the POI over 97-98.
6. The market share of the petitioner has increased from 70.2% in 1997-98 to 71.8% in the POI.

Thus all vital economic indicators having a bearing on the state of the domestic industry have shown significant improvement in the period of investigation.

H. CONCLUSION ON INJURY

16. In the course of the investigations the following aspects were also brought to the notice of the Authority:-

(i) M/s Kesar Petroproducts Ltd., (as brought out in para 3 (a) of the preliminary findings), has a capacity to produce 5000 MT of Bisphenol-A of which 3600 MT is sold in the domestic market. Phenol is the basic raw material required for the manufacture of the subject goods and it is attracting safeguards duty. As such the cost of manufacture of Bisphenol-A has gone up further compared to the cost of production in the international market. In the recent past the petitioner has resorted to closure of its plants without giving prior notice to the customers which left them without supply of Bisphenol-A for quite some time.

(ii) A major user of Bisphenol-A viz., M/s Petro Araldite Pvt Ltd., Chennai, has stated that with increase in capacity utilisation levels from current 20-25% in year 2000 to 45-50% for year 2002, their Bisphenol-A consumption would go up from current annual level of nearly 3500 tons to 7000 tons during 2002. Their exports constitute 30% of total output and it is expected that this proportion will be maintained for the next 2 years. Their Bisphenol-A consumption for exports alone at present 900 tons during 2000 would also double to around 1800 tons in the year 2002. At full capacity in a few years time, coupled with increased

exports and growth in the domestic market, they expect to consume around 16000 tons of Bisphenol-A which is far beyond the capacity of the monopoly of the local Bisphenol-A producer.

(iii) The Indian Chemical Manufacturers' Association in its views to the Authority have stated that economy of scale is a major reason for Bisphenol-A not being competitively produced. The Government should fix up DEPB for exports of epoxy and other Bisphenol based end products that would help exporters prefer local Bisphenol versus imports. The Government should also consider raising duty on electronic grade epoxy resin. This would create additional demand for Bisphenol-A.

The Authority observes that:-

(i) The landed prices as per DGCIS data from EU and Taiwan were Rs 61.74/kg and Rs 63/kg in 1998-99 whereas the selling price of domestic industry (net of excise duty) in 98-99 was Rs ***/kg. Similarly, the landed values of imports from EU and Taiwan as per DGCIS data in 99-00 (April-September) were Rs 61.49/kg and Rs 59.81/kg from EU and Taiwan respectively while domestic industry selling price was Rs ***/kg. In the POI the landed prices from EU and Taiwan were Rs 61.6/kg and Rs 61.40/kg respectively whereas domestic industry selling price was Rs ***/kg. Therefore the landed values of imports from the subject countries were far higher than the selling prices of domestic industry which does not establish injury to the petitioner from these dumped imports.

Annexure II (ii) of the Anti-dumping Rules states that "With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to sub-rule (2) of rule 18 the designated authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."

The dumped prices as shown above have been significantly higher than the selling prices of the petitioner during the period of investigation. Therefore the question of price undercutting or injury from dumped imports does not arise.

(iii) The closing stocks of domestic industry were lowest at 126.6 MT in 98-99 i.e, the first 12 months of the POI, when in the same year total imports grew by 53% over 97-98 and selling prices of domestic industry grew by 15.5%. The production was also higher at 5242 MT.

(iii) The demand for Bisphenol-A increased from 3020 MT in 1997-98 to 4598 MT in 1998-99. The demand for 99-2000 is 7919 MT. The demand level in 1998-99 represents an increase of 52% over that of 97-98. The demand level in 99-2000 represents an increase of 72% over that of 98-99. As pointed out by interested parties, the demand for Bisphenol A in India has been growing steadily due to the increased production of Polycarbonate resins and epoxy resins.

Although the petitioner was able to meet the demand in 98-99, the production of the petitioner in 99-2000 (Apr-Sep) was 2705 MT whereas demand was 3304 MT. In 1999-2000 the petitioner's production was 6147 MT while the level of demand was 7919 MT. Annexure II (ii) of the Anti-dumping Rules state that while examining the volume of dumped imports, the said authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. It is seen that the share of dumped imports in demand increased from 24.9% in 97-98 to 28.7% in 98-99 and declined to 24% in 99-00 (Apr-Sep'99). Share of dumped imports declined to 23% in 1999-2000 (12 months). The share of the petitioner in demand was 70.2% in 97-98, remained at the same level in 98-99 and increased thereafter to 74.06% (in Apr-Sep'99), and to 75.7% in 1999-2000 (12 months).

(iv) The domestic industry incurred losses amounting to (-177.54) lakhs in 98-99 and (-173.34) lakhs in 99-00. However in spite of these losses their annual report for 1999-2000 shows a tremendous increase in licensed capacity from a level of 5000MT to 20,000MT which is not an indicator of injury. Their installed capacity also increased from 5000MT to 6000 MT. In their response dated 29/11/2000, they have not indicated this increase. They have merely stated that production can be increased by technical innovation and bottle necking in which they have made investments.

As per the provisions contained in para (iv) Annexure II of the Anti-dumping Rules, the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic indicators and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilisation of capacity; factors affecting domestic prices etc. As stated in Para 13 (e) the domestic industry has shown improvement and increase in all vital economic indices.

17. It is recognised that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. Some interested parties have argued that increase in import duty on Bisphenol-A will trigger off increase in prices of epoxy resins etc. which would have an adverse effect on exports. Interested parties have stated that prices of phenol and acetone had dropped and in particular phenol prices had reduced from Rs 40/kg to Rs 29/kg. International epoxy resin prices have come down and are further dropping. With low prices prevailing in the international market, no customer would give higher prices to local epoxy manufacturers. Dealers are importing epoxy resin and selling at cheaper prices than epoxy manufacturers. The Authority note that prices /rates at which phenol and acetone have been purchased by the petitioner have declined since 1995-96 and were as follows:-

Year	Phenol (Rs/MT)	Acetone (Rs/MT)
1995-96	***	***
1996-97	***	***
1997-98	***	***
1999-00 (till 30/9/99)	***	***
POI (April 1998-Sep 1999)	***	***

3399CI/2000-6

The petitioner has stated that prices of phenol and acetone are beyond the control of the petitioner and have increased significantly during the post investigation period. The Authority notes that if the petitioner was unable to competitively manufacture its product during the period of declining prices, it would be more difficult to do so in the post—investigation phase with the rise in prices of basic raw materials.

I. CAUSAL LINK

18. The Authority notes that the domestic industry has shown improvement in respect of all vital parameters having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilisation, and sales. The market share of the domestic industry has increased during the POI. In 1999-2000 they have also increased their licensed and installed capacity. Hence the dumped imports have no volume effect on the domestic industry. In examining the price effect, that is, whether the dumped imports have significantly undercut the price of the like product in India, the Authority notes that the landed value of Bisphenol-A from both EU and Taiwan has been significantly higher than the net selling price of the petitioner during the period of investigation. Therefore the question of price undercutting or material injury to the petitioner from the said imports does not arise. The Authority therefore holds that the material injury to the domestic industry has not been caused by the dumped imports from the subject countries.

19. FINAL FINDINGS:-

The Authority after considering the foregoing, concludes that:

- (a) Bisphenol-A originating in or exported from EU and Taiwan has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the domestic industry has suffered injury to the extent that it has incurred losses while all other vital economic indices have shown improvement;
- (c) however no causal link could be established between the injury suffered by the domestic industry and the dumped imports from the subject countries.

20. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

21. It is therefore considered necessary to withdraw the anti-dumping duties recommended provisionally, vide notification No. 47/1/99 dated 27th April 2000, on imports of Bisphenol-A, classified under customs sub-heading 2907.23 of the Customs Tariff Act, 1975 being the subject matter of this investigation, originating in or exported from European Union and Taiwan.

22. In view of the above, the Designated Authority recommends withdrawal of the provisional duties in terms of the provisions of Rule 18, sub-rule (4). The provisional duty already imposed and collected, if any, shall be refunded.

23. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 27th April, 2000.

24. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra.

L.V SAPTHARISHI, Designated Authority

